मूल्य: १०.०० रुपया

तित्थयर

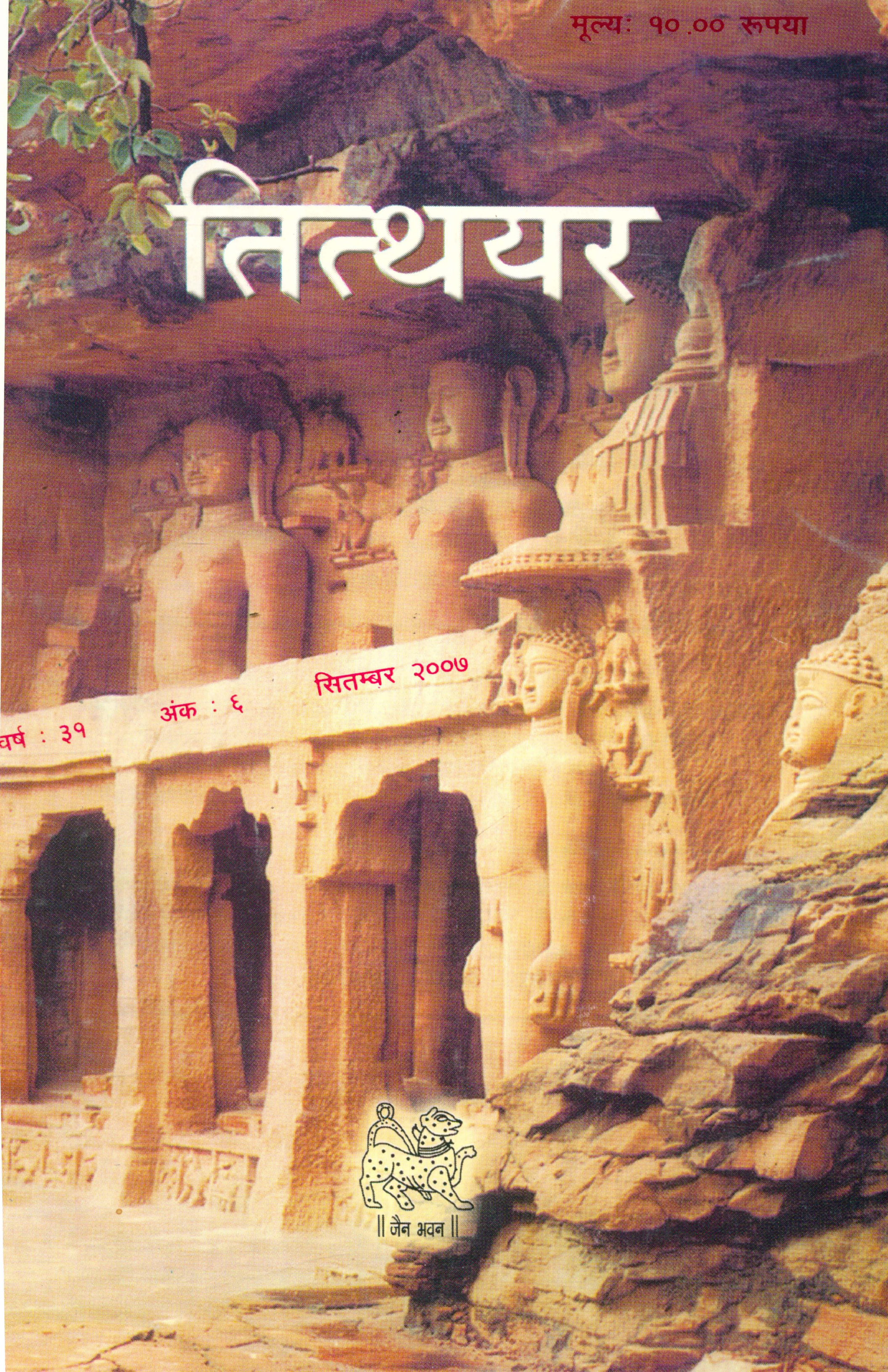

सितम्बर २००७

वर्ष : ३१ अंक : ६

|| जैन भवन ||

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - ३१ अंक - ६ सितम्बर २००७

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता – Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655,

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 100.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 300.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	वाचक उमास्वाति का सभाष्य तत्त्वार्थसूत्र और उनका सम्प्रदाय	पं. नाथूरामजी प्रेमी	२६७
२.	श्री कीर्तिरत्नसूरि रचित- नेमिनाथ महाकाव्य	प्रो. सत्यव्रत 'तृषित'	२७३
४.	सिंहल की राजकन्या (**सुदर्शना**)	आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.	२८३

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) में स्थित प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

प्रवर्तक उमास्वाति का सभाष्य तत्त्वार्थसूत्र और उनका सम्प्रदाय

श्रीयुक्त पं. नाथूरामजी प्रेमी

क्या टीकाकार यापनीयों से परिचित थे?

भाष्य के अतिरिक्त तत्त्वार्थ की जितनी टीकायें उपलब्ध हैं उनमें सबसे पहली सर्वार्थसिद्धि है। इसका रचना-काल विक्रम की छठी सदी का प्रारंभ है।[१] संभवतः इसी के द्वारा दिगम्बर-सम्प्रदाय तत्त्वार्थसूत्र से परिचित हुआ। इसी तरह आचार्य हरिभद्र की अधूरी[२] टीका और सिद्धसेनगणि की सम्पूर्ण टीका के द्वारा श्वेताम्बर सम्प्रदाय में तत्त्वार्थ और उसके भाष्य को स्थान मिला। इन दोनों का ही समय विक्रम की ८-९वीं शताब्दी[३] है।

पिछली दोनों टीकायें सर्वार्थसिद्धि ही नहीं अकलंकदेवकी प्रसिद्ध टीका राजवार्तिक के भी बाद की हैं और जैसा कि पं० परमानन्दजी शास्त्री ने सप्रमाण सिद्ध किया है[४] उनके कर्त्ताओं के सामने सर्वार्थसिद्धि और राजवार्तिक मौजूद थे। इनके सिवाय ऐसा जान पड़ता है कि सिद्धसेनगणि के सामने और भी छोटी मोटी टीकायें रही होंगी ;[५] परन्तु संभवतः वे यापनीयों की होंगी जैसा कि सिद्धसेन की वृत्ति के एक उल्लेख से प्रकट होता है।[६]

---

१. देखो, जैनसाहित्य और इतिहास पृष्ठ ११५-२०। ३.१.१९.

२. यह टीका हरिभद्र ने अ० ५ सूत्र २३ तक लिखी थी और शेष यशोभद्र और उनके अज्ञात शिष्य ने सिद्धसेन की वृत्ति की ही प्रायः नकल करके पूर्ण की है। शुरू के अध्यायों में भी यत्र तत्र सिद्धसेन वृत्ति के अंश मिलते हैं।

३. देखो, हिन्दी तत्त्वार्थसूत्र की भूमिका पृ० ५०।

४. देखो, अनेकान्त वर्ष ३, अंक ११ में सिद्धसेन के सामने स० वि० और राजवार्तिक।

५. देखो, हिन्दी तत्त्वार्थसूत्र की भूमिका पृ० ५१।

६. देखो, आठवें अध्याय के अन्तिम सूत्र की वृत्ति, जिसमें कहा है कि कुछ लोग सम्यक्त्व, हास्य, रति, पुरुषवेद को पुण्य प्रकृति मानते हैं, जो इष्ट नहीं है—

सम्यक्त्व-हास्य-रति-धववेदानां पुण्यतामुशन्त्येके।
न तथा पुनस्तदिष्टं मोहत्वाद्देशघातित्वात्।।

जहाँ तक हम जानते हैं हरिभद्र और सिद्धसेन के समय में उत्तर-पश्चिम भारत में यापनीय सम्प्रदाय के प्रत्यक्ष अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं है। इसलिए उनका यापनीयों से साक्षात् सम्बन्ध तो रहा नहीं होगा, केवल उनके साहित्य से परिचय होगा परन्तु उस साहित्य की सैद्धान्तिक दृष्टि से श्वेताम्बर सम्प्रदाय के साथ इतनी अधिक समानता है और इतनी कम भिन्नता है कि वह सहसा समझ में नहीं आ सकती। इसलिये उक्त टीकाकारों ने भाष्यकारको अपने ही सम्प्रदाय का उच्चैनागरशाखा का वाचक समझ लिया होगा। परन्तु चूंकि सिद्धसेनगणि कट्टर आगमिक थे, इसलिए उन्हें भाष्य में जहाँ कहीं आगम-विरोध दिखलाई दिया है वहाँ वे उसे स्पष्टरूप से प्रकट करने से भी नहीं चूके हैं, परन्तु इसके लिए उन्होंने सूत्रपाठ या भाष्य में कोई हस्तक्षेप नहीं किया है। उमास्वाति वाचकमुख्य हैं, वाचक तो पूर्वो के ज्ञाता होते हैं, उन्होंने ऐसा आगमविरोधी कैसे लिख दिया, वहाँ अवश्य ही किसी दुर्विदग्ध ने भाष्य को नष्ट कर दिया है। उनके इस तरह के वाक्यों से प्रतीत हौता है कि वे भाष्यकार को अपने ही सम्प्रदाय का समझते थे। वाचक पदवी भी श्वेताम्बर सम्प्रदाय में पहले प्रचलित थी।

परन्तु आचार्य पूज्यपाद यापनीय सम्प्रदाय से अवश्य परिचित रहे होंगे। क्योंकि दक्षिण और कर्नाटक में उनसे पहले, चौथी पाँचवीं सदी से लेकर उनसे

और फिर अपरस्त्वाह कहकर नीचे लिखे. पाँच कारिकायें दी हैं जिनमें उक्त प्रकृतियों का पुण्यत्व प्रतिपादन किया है और भाष्य का सर्व चैतदष्टविधं कर्म पुण्यं पापं च अंश उद्धृत करके सूत्र को भाष्यानुकूल बतलाया है—

रति-सम्यक्त्व-हास्यानां पुंवेदस्य च पुण्यताम्। मोहनीयमिति भ्रान्त्या केचिन्नेच्छन्ति तच्च न।। सर्वमष्टविधं कर्म पुण्यं पापं च निर्वृतम्। किं कर्मव्यतिरिक्तं स्याद्यस्य पुण्यत्वमिष्यताम्।। शुभायुर्नामगोत्राणि सद्वेद्यं चेति चेन्मतम्। सम्यक्त्वादि तथैवास्तु प्रसादनमिहात्मनः।। पुण्यं प्रीतिकरं सा च सम्यक्त्वादिषु पुद्गला। मोहत्वं तु भवाबन्ध्यकारणादुपदर्शितम्।। मोहो रागः स च स्नेहो, भक्तिरागः स चार्हति। रागस्यास्य प्रशस्तत्वान्मोहत्वेनापि मोहता।।

इससे साफ समझ में आता है कि सिद्धसेन के सामने किसी यापनीय विद्वान् की ही कोई तत्त्वार्थवृत्ति थी जिसमें से उक्त कारिकायें उक्त कारिकायें उद्धृत की हैं और उस वृत्तिकार के सामने सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यं सूत्र जिसमें है, ऐसा सूत्र-पाठ भी था। यह वृत्ति सर्वार्थ सिद्धि से पहले की भी हो सकती है।

बहुत बाद पन्द्रहवीं सदी तक यह सम्प्रदाय जीवित रहा है[१]। कदम्बवंशी राजाओं के दानपत्रों[२] में, जो पाँचवीं शताब्दि के अनुमान किये गये हैं, यापनीयों को जमीन दान की गई है। उन्हीं के एक और दानपत्र से मालूम होता है कि उस समय दिगम्बर तथा यापनीय पास पास भी रहते थे और उन्हें एक साथ एक ग्राम के हिस्से दान किये गये हैं।[३] यापनीयों की भगवती आराधना पूज्यपाद के पहले की और उसकी विजयोदया टीका बाद की लिखी हुई है। शाकटायन व्याकरण और स्त्रीमुक्ति-केवलमुक्तिप्रकरण अमोघवर्ष प्रथम के समय में विक्रम की नवीं शताब्दि के प्रारंभ के हैं। इस समय[४] के और इससे पहले[५] के और भी कई दान-पत्र मिले हैं, जिनमें यापनीयों को ग्राम या भूमि दान की गई है।

गरज यह कि पूज्यपाद के समय में यह एक सजीव सम्प्रदाय था। इसलिए उन्हें उनका और उनके साहित्य का साक्षात् परिचय न रहा हो यह नहीं कहा जा सकता।

सूत्रपाठ का संशोधित संस्करण

उस समय तत्त्वार्थसूत्र और भाष्य की कर्नाटक के यापनीयों में अवश्य प्रसिद्धि रही होगी और उसका पठन-पाठन भी होता होगा। उसे देखकर आचार्य पूज्यपाद के हृदय में यह भावना उठना स्वाभाविक है कि इस तरह का सुन्दर

१. कागबाड़े के जैनमन्दिर के भौहिरे में श० सं० १३१६ (वि० सं० १४५१) का यापनीयसंघ के धर्मकीर्ति और नागचन्द्रका समाधि-लेख है। इनके गुरु नेमिचन्द्र को तुलुवराज्य का स्थापक बतलाया है।-(बाम्बे यूनिवर्सिटी जर्नल, मई १९३३ का यापनीय संघ नामक लेख)

२. देखो, रायल एशियाटिक सोसाइटी बाम्बे ब्रांच जर्नल नं० ३४, जिल्द १२ और जैनहितैषी भाग १४, अंक ७-८। ये दानपत्र करजघी (धारवाड़) में मिले थे। कदम्बवंश के श्रीमृगेशवर्मा का एक और दानपत्र इंडियन ए० जि० ६, पृ० २५-२६ में छपा है जिसमें कुमारदत्त आदि यापनीय मुनियों को ग्राम-दान किया गया है।

३. देखो अनेकान्त भाग ७ अंक १-२ में मेरा लिखा हुआ कूर्चकों का सम्प्रदाय। और इंडियन ए० जिल्द ६, पृ० २४-२५

४. देखो, पृथ्वीकोंगणि महाराज का श्रीपुर (धारवाड़) के लोकतिलक जैनमन्दिर को दिया हुआ श० सं० ६९८ का दानपत्र (इंडियन एण्टिक्वेरी २-१५६-५९) और द्वि० प्रभूतवर्ष का मान्यपुर (मैसूर) के शिलाग्राम जिनालय को दिया हुआ श० सं० ७३५ का दानपत्र। (- ई० ए० जिल्द १२ पृ० १३-१६)

५. देखो, सत्याश्रयवल्लभ का श० सं० ४११ का यापनीय काकोपलाम्नाय के जिनमन्दिर मुनि को त्रिभुवन तिलक मन्दिर के लिए दिया हुआ दानपत्र (ई० ए० जिल्द ७, पृ० २०९)

ग्रन्थ हमारे सम्प्रदाय में भी होता तो कितना अच्छा होता। पाणिनि-व्याकरण को पढ़कर जिस तरह उन्होंने जैनसाहित्य में एक व्याकरण-ग्रन्थ की कमी महसूस की और उसकी पूर्ति उसी के अनुकरण पर जैनेन्द्र की रचना करके की, उसी तरह यदि यापनीयों के तत्त्वार्थसूत्र और भाष्य की कमी की पूर्ति उन्होंने सर्वार्थसिद्धि टीका लिखकर की हो, तो कोई आश्चर्य नहीं।

श्वेताम्बराचार्यों के समान भाष्य की टीका तो वे कर नहीं सकते थे क्योंकि उसमें सैकड़ों स्थल ऐसे हैं जो उनके सिद्धान्तों से विरुद्ध जाते हैं और किसी तरह अनुकूल नहीं बनाये जा सकते। इसलिए एक स्वतंत्र टीका लिखने से ही उनकी इच्छाकी पूर्ति हो सकती थी।

सर्वार्थसिद्धि का सूत्र-पाठ भी हमारी समझ में उमास्वाति के सूत्र-पाठ को थोड़ा सा संशोधन परिवर्तन करके तैयार किया गया है—केवल उतने ही सूत्रों में फर्क करके जो दिगम्बर सम्प्रदाय के साथ बिलकुल ही मेल नहीं खाते थे अथवा जिन जिनमें कुछ त्रुटियाँ नजर आती थीं।[1]

सूत्रपाठ के संशोधन और परिवर्तन का ऐसा ही एक उदाहरण पूज्यपाद के

---

१. उपलब्ध टीकाओं से मालूम होता है कि मूल सूत्र-पाठ में उनसे पहले ही बहुत से पाठान्तर प्रचलित थे। इस पाठान्तरों की थोड़ी बहुत चर्चा प्रायः सभी टीकाकारों ने की है। सर्वार्थसिद्धि में दो ही पाठान्तरों का उल्लेख है, राजवार्तिक में उससे कुछ अधिक् पाठान्तरों की चर्चा है और सिद्धसेन की वृत्ति में तो बीसों पाठान्तरों की आलोचना है। जैसे – अ० २ सू० ९, १९,२४,३६,४९, अ० ५, सू० २, ३, अ० सू० ३, २३ आदि। अधिक पाठान्तर भाष्य-प्रतियों के कारण हुए जान पड़ते हैं क्योंकि हस्तलिखित प्रतियों में मूल और भाष्य लगातार-रनिंग-लिखे रहते हैं। उनमें कहाँ तक सूत्र-पाठ है और कहाँ से भाष्य पाठ शुरू होता है, यह जल्दी और सुगमता से समझ में नहीं आ सकता। इसलिए बहुत से सूत्र भाष्य में मिल गये हैं और बहुत से भाष्य-वाक्य सूत्र समझ लिये गये हैं।

इसके सिवाय लिपिकर्त्ताओं की कृपा से भाष्यपाठ में भी बहुत से पाठान्तर और गोलमाल होते रहे हैं। जैसे अ० ४ सू० ३८ के भाष्य में अजघन्योत्कृष्टा सर्वार्थसिद्ध इति यह पाठ हरिभद्र को नहीं मिला। सिद्धसेन की वृत्ति में अ० ५, सू० २९ का भाष्य ३-४ पंक्तियों का है जब कि हरिभद्र की वृत्ति में २५-२६ पंक्तियों का। इसी तरह अ० २ के अन्तिम सूत्र के भाष्य में जहाँ सिद्धसेन को "एभ्य औपपातिकचरमदेहासंख्येयवर्षायुर्भ्यः" पाठ मिला है वहाँ हरिभद्र को "एभ्य औपपातिकचरमदेहोत्तमपुरुषासंख्येयवर्षायुर्भ्यः" और पूर्वोक्त पाठ में उत्तमपुरुषा न

ही जैनेन्द्र (व्याकरण) सूत्र-पाठ का हमारे सामने है। तत्त्वार्थसूत्र के ही समान जैनेन्द्र के भी दो सूत्र-पाठ प्रचलित हैं। एक पूज्यपादकृत असली सूत्र-पाठ जिसपर महावृत्ति, पंचवस्तु और शब्दांभोजभास्कर आदि अनेक टीकाग्रन्थ लिखे गये हैं; दूसरा गुणनन्दिकृत सूत्रपाठ जिसपर प्रक्रिया, शब्दार्णवचन्द्रिका आदि टीकायें मिलती हैं। पहले सूत्रपाठ में लगभग तीन हजार और दूसरे में लगभग सैंतीस सौ सूत्र हैं। फिर भी दोनों के अधिकांश सूत्र समान हैं, दोनों का प्रारंभिक मंगलाचरण एक है और दोनों के कर्त्ताओं का नाम भी टीकाकारों नें देवनन्दि या पूज्यपाद लिखा है, सिर्फ दूसरे को गुणनन्दि-तानितवपुः विशेषण दिया गया है।[१] और एक ही सूत्र-पाठ से यापनीयों, दिगम्बरों और श्वेताम्बरों के ही समान अपने अपने सिद्धान्तों के प्रतिपादन करने का दूसरा उदाहरण ब्रह्मसूत्र का है जिसपर शंकर, निम्बार्क, मध्य, रामानुज और वल्लभ आदि पाँच छह आचार्यों ने द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि सिद्धान्तों का प्रतिपादन करनेवाले जुदा जुदा भाष्य लिखे हैं। उनके सूत्रपाठों में भी भिन्नता है। कई सूत्र ऐसे हैं जिन्हें एक मानता है, दूसरा नहीं मानता, और कई के शब्दों में भी न्यूनाधिक्य है।

सर्वार्थसिद्धि टीका में उसके कर्त्ता ने दो पाठान्तरों का निर्देश किया है।[२]

होने से सिद्धसेन ने सूत्र में ही उत्तमपुरुष होने न होने का सन्देह किया है—"अतो भाष्यादेव सन्देहः"। जरूरत इस बात की है कि मूल और भाष्य की अधिक से अधिक प्राचीन प्रतियाँ संग्रह की जाएं, उनमें जितने पाठ-भेद मिलते हैं वे सब छाँटे जाएं और फुर उन सबपर टीकाओं की पाठभेद सम्बन्धी चर्चा को सामने रखकर बारीकी से विचार किया जाय। इस प्रयत्न से दोनों सम्प्रदायों के जिन जिन सूत्रों में साधारण शाब्दिक अन्तर हैं, वे तो एक जैसे ही सिद्ध हो जाएगे और शेष सूत्रों के विषय में यह पता लग जाएगा कि उनमें से किस किस में मतभेद के कारण भिन्नता हुई हैं और किस किसमें त्रुयियों के कारण उचित संशोधन या परिवर्तन किया गया है और कौन कौन सूत्र विस्तार के अभिप्राय से या जरूरत समझकर बढ़ाये गये हैं। विस्तार के अभिप्राय से बढाये गये सूत्रों की चर्चा सिद्धसेन ने तीसरे अध्याय के ११वें सूत्र की टीका में की है—"अपरे पुनर्विद्वांसोऽतिबहूनि स्वयं विरचय्यास्मिन्प्रस्तावे सूत्राण्यधीयते विस्तरदर्शनाभिप्रायेण"। और इसी सूत्र का भाष्य वाक्य है—"तत्र पंचयोजनशतानि षगिंशतिषटूचैकोनविंशतिभागा भरतविर्ष्कभः"। इसपर लिया है—"अपरे त्विद्मेध भाष्यवाक्यं सूत्रीकृत्याधीयते"।

१. देखो, जैनसाहित्य और इतिहास में देवनन्दि और जैनेन्द्रव्याकरण शीर्षक लेख पृ० १०० - ६

२. पहले अध्याय का १६वां सूत्र— बहुबहुबिधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम।—अपरेषां क्षिप्रनिःसृत इति पाठः। दूसरे अध्याय का ५३वाँ सूत्र—औपपातिकचरमोत्तमदेहाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः—चरमदेहा इति वा पाठः।

यद्यपि ये पाठान्तर बिल्कुल साधारण से हैं, उनसे कोई बड़ा मत-भेद प्रकट नहीं होता है; फिर भी कुछ विद्वान् उनके कारण यह अनुमान करते हैं कि सर्वार्थसिद्धि से पहले भी दिगम्बरमान्य सूत्रपाठ रहा होगा, तभी तो ये पाठान्तर दिये गये हैं। अर्थात् उनके मत से इस सूत्रपाठ के कर्त्ता स्वयं पूज्यपाद नहीं हो सकते।

यद्यपि अभीतक वाचक उमास्वाति का समय ठीक निर्णीत नहीं है; फिर भी मोटे तौरपर उनके और पूज्यपाद के बीच डेढ़ दो सौ वर्ष का अन्तर अवश्य है। इस लम्बे समय में उनके तत्त्वार्थसूत्र और भाष्य की बीसों प्रतिलिपियाँ हुई होंगी और उनपर छोटे मोटे टीका-टिप्पणग्रन्थ भी लिखे गये होंगे।[१] इन प्रतिलिपियों और टीका-टिप्पणों से अनेक पाठान्तरों की सृष्टि हो सकती है और उन्हीं में से उक्त दो पाठान्तरों का भी उल्लेख पूज्यपाद स्वामी कर सकते हैं। सिद्धसेनगणि ने अपनी भाष्यवृत्ति में इस तरह के अनेक पाठ-भेदों की चर्चा की है।[२] इसके सिवाय भाष्य की प्रतिलिपियों पर से भी इन साधारण पाठान्तरों का जन्म हो सकता है।[३] अतएव केवल उक्त पाठान्तरों के कारण आचार्य पूज्यपादद्वारा संशोधित पाठ के तैयार होने की संभावना का विरोध नहीं किया जा सकता।

फिर भी यदि यही मान लिया जाय कि, पूज्यपाद को यह सूत्रपाठ ज्योंका त्यों मिला था, स्वयं उन्होंने इसका संस्कार नहीं किया, और यदि यह भी निश्चित हो जाय कि सिद्धसेन ने जिस यापनीय-वृत्ति की कारिकायें अपररुत्वाह कहकर उद्धृत की हैं, वह सर्वार्थसिद्धि से पहले की है, बाद की नहीं, तो भी हमारे निर्णय में कोई बाधा नहीं जायेगी। इतना ही और कहना होगा कि इसे स्वयं उन्होंने नहीं किन्तु उनके पूर्ववर्ती किसी दूसरे दिगम्बराचार्य ने संशोधित किया होगा और यह वाचक उमास्वाति के मूल सूत्र-पाठ का ही दिगम्बर संस्करण है।

---

१. ये टीका-टिप्पण यापनीय विद्वानों के ही होंगे, दिगम्बर-श्वेताम्बरों के नहीं। सिद्धसेन ने आठवें अध्याय के अन्त में अपरस्त्वाह कहकर जो कारिकायें उद्धृत की हैं वे निश्चय से किसी यापनीय-टीका की हैं।

२. केचिदभिदधते–नास्ति सूत्रकारस्योत्तमपुरुषग्रहणमिति। कथम्। ये किल चरम देहास्ते नियमत एवोत्तमा भवन्ति। उत्तमास्तु चरमदेहस्वेन भाज्या वासुदेवादय इति। तस्मादनार्षमुत्तमपुरुषग्रणमिति। अ० २-५३।

३. रायचन्द्रशास्त्रमाला द्वारा प्रकाशित और ऋषभदेव के० सं० द्वारा प्रकाशित भाष्य पाठ में छपा है–अनिश्रितमवगृह्णाति। निश्रितमवगृह्णाति। और देवचन्द लालभाई के संस्करण में छपा है–निश्रितमवगृह्णाति। अनिश्रितमवगृह्णाति। भिन्न भिन्न पोथियों में इन दोनों पाठों की उपस्थिति में कहा जा सकता है कि अपरेषां क्षिप्रनिःसृत इति पाठः।

श्री कीर्तिरत्नसूरि रचित नेमिनाथ महाकाव्य

प्रो. सत्यव्रत 'तृषित'

नेमिनाथकाव्य का कथानक अत्यल्प है, किन्तु कवि ने उसे विविध वर्णनों, संवादों तथा स्तोत्रो से पुष्ट–पूरित कर बारह सर्गों के विस्तृत आलवाल में आरोपित किया है। यह विस्तार महाकाव्य की कलेवरपूर्ति के लिए भले ही उपयुक्त हो, इससे कथावस्तु का विकासक्रम विश्रृंखलित हो गया है तथा कथाप्रवाह की सहजता नष्ट हो गयी है। कथानक के निर्वाह की दृष्टि से नेमिनाथमहाकाव्य को अधिक सफल नहीं कहा जा सकता। पग-पग पर प्रासंगिक अप्रासंगिक वर्णनों के सेतु बांध देने से काव्य की कथावस्तु रुक-रुक कर, मन्दगति से आगे बढ़ती है। वस्तुतः, कथानक की ओर कवि का अधिक ध्यान नहीं है। काव्य का अधिकतर भाग वर्णनों से ही आच्छन्न है। कथावस्तु का सूक्ष्म संकेत करके कवि तुरन्त किसी न किसी वर्णन में जुट जाता है। कथानक की गत्यात्मकता का अनुमान इसी से किया जा सकता है कि तृतीय सर्ग में हुए पुत्रजन्म की सूचना समुद्र विजय को सातवें सर्ग में मिलती है। मध्यवर्ती तीन सर्ग शिशु के सूतिकर्म, जन्माभिषेक आदि के विस्तृत वर्णनों पर व्यय कर दिये गये हैं। तुलनात्मक दृष्टि से यहाँ यह जानना रोचक होगा कि रघुवंश में द्वितीय सर्ग में जन्म लेकर रघु चतुर्थ सर्ग में दिग्विजय से लौट भी आता है। द्वितीय सर्ग में प्रभात का तथा अष्टम में षड्ऋतु का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। काव्य के शेषांश में भी वर्णनों का बाहुल्य है। इस वर्णनप्राचुर्य के कारण काव्य की अन्विति खण्डित हो गयी है। काव्य के अधिकांश भाग मूल कथावस्तु के साथ सूक्ष्म-तन्तु से जुड़े हुए हैं। इसलिए काव्य का कथानक लंगड़ाता हुआ ही चलता है। किन्तु यह स्मरणीय है कि तत्कालीन महाकाव्य-परिपाटी ही ऐसी थी कि मूल कथा के सफल विनियोग की अपेक्षा विषयान्तरों को पल्लवित करने में ही काव्यकला की सार्थकता मानी जाती थी। अतः

कीर्त्तिराज को इसका सारा दोष देना न्याय नहीं। वस्तुतः, उन्होंने वस्तुव्यापार के इन वर्णनों की अपनी बहुश्रुतता का क्रीडांगन न बनाकर तत्कालीन काव्यरूढ़ि के लौहपाश से बचने का श्लाध्य प्रयत्न किया है।

नेमिनाथमहाकाव्य में प्रयुक्त कतिपय काव्य-रुढ़ियाँ :

संस्कृत महाकाव्यों की रचना एक निश्चित ढर्रे पर हुई है जिससे उनमें अनेक शिल्पगत समानताएं दृष्टिगम्य होती हैं। शास्त्रीय मानदंडों के निर्वाह के अतिरिक्त उनमें कतिपय काव्यरूढ़ियों का मनोयोगपूर्वक पालन किया गया है। यहाँ हम नेमिनाथ महाकाव्य में प्रयुक्त दो रुढ़ियों की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक समझते हैं क्योंकि इनका काव्य में विशिष्ट स्थान है तथा ये इन रूढ़ियों के तुलनात्मक अध्ययन के लिये रोचक सामग्री प्रस्तुत करती हैं। प्रथम रुढ़ि का सम्बन्ध प्रभात वर्णन से है। प्रभात वर्णन की परम्परा कालिदास तथा उनके परवर्ती अनेक महाकाव्यों में उपलब्ध है। कालिदास का प्रभात वर्णन आकार में छोटा होता हुआ भी मार्मिकता में बेजोड़ है। माघ का प्रभातवर्णन बहुत विस्तृत है, यद्यपि प्रातःकाल का इस कोटि का अलंकृत वर्णन समूचे साहित्य में अत्यन्त दुर्लभ है। अन्य काव्यों में प्रभातवर्णन के नाम पर पिष्टपेषण ही हुआ है। कीर्त्तिराज का यह वर्णन कुछ विस्तृत होता हुआ भी सरसता तथा मार्मिकता से परिपूर्ण है। माघ की भाँति उसने न तो दूर की कौड़ी फेंकी है और न वह ज्ञान-प्रदर्शन के फेर में पड़ा है। उसने तो, कुशल चित्रकार की तरह, अपनी ललित-प्रांजल शैली में प्रातःकालीन प्रकृति के मनोरम चित्र अंकित करके तत्कालीन सहज वातावरण को अनायास उजागर कर दिया है।[२] मागधों द्वारा राजस्तुर्ति, हाथी के जागकर भी मस्ती के कारण आँखें न खोलने तथा करवट बदलकर श्रृंखलारव करने[३] और घोड़ों के द्वारा नमक चाटने की रूढ़ि का भी इस प्रसंग में प्रयोग किया गया है। अपनी स्वाभाविकता तथा मार्मिकता के कारण, कीर्तिराज का यह वर्णन संस्कृत साहित्य के सर्वोत्तम प्रभातवर्णनों से टक्कर ले सकता है।

---

२. ध्याने मनः स्वं मुनिभिर्विलम्बितं, विलम्बित कर्कशरोचिषा तमः।
सुष्वाप यस्मिन् कुमुदं प्रभासितं, प्रभासितं पंकजबान्धवोपलं :।।२।४१

३. निद्रासुखं समनुभूय विराय रात्रावुद्भूतश्रृंखलारवं परिवर्त्य पार्श्वम्।
प्राप्य प्रबोवमपि देव ! गजेन्द्र एष नोन्मोलयत्यलसनेत्रयुगं मदान्धः।।२।५४

नायक को देखने को उत्सुक और युवतियों के सम्भ्रम तथा तज्जन्य चेष्टाओं का वर्णन करना संस्कृत-महाकाव्यों की एक अन्य बहुप्रचलित रूढ़ि है, जिसका प्रयोग नेमिनाथ काव्य में भी हुआ है। बौद्ध कवि अश्वघोष से प्रारम्भ होकर कालिदास, माघ, हर्ष आदि से होती हुई यह काव्य रूढ़ि कतिपय जैन कवियों की रचनाओं में भी दृष्टिगत होती है। अश्वघोष तथा कालिदास का यह वर्णन, अपने सहज लावण्य से चमत्कृत है। माघ के वर्णन में, उनके अन्य अधिकांश वर्णनों के समान, विलासिता की प्रधानता है। उपाध्याय कीर्त्तिराज का सम्भ्रमचित्रण यथार्थता से ओतप्रोत है, जिससे पाठक के हृदय में पुरसुन्दरियों की त्वरा सहसा प्रतिबिम्बित हो जाती है। नारी के नीवीस्खलन अथवा अधोवस्त्र के गिरने का वर्णन, इस सन्दर्भ में, प्रायः सभी कवियों ने किया है। कालिदास ने अधीरता को नीवीस्खलन का कारण बताकर मर्यादा की रक्षा की है। माघ ने इसका कोई कारण नहीं दिया जिससे उसकी नायिका का विलासी रूप अधिक मुखर हो गया है। नग्न नारी को जनसमूह में प्रदर्शित करना जैन यति की पवित्रंतावादी वृत्ति के प्रतिकूल था, अतः उसने इस रूढ़ि को काव्य में स्थान नहीं दिया। इसके विपरीत काव्य में उत्तरीय-पात का वर्णन किया गया है। शुद्ध नैतिकतावादी दृष्टि से तो शायद यह भी औचित्यपूर्ण नहीं किन्तु नीवीस्खलन की तुलना में यह अवश्य ही क्षम्य है, और कवि ने इसका जो कारण दिया है उससे तो पुरसुन्दरी पर कामुकता का दोष आरोपित ही नहीं किया जा सकता। कीर्त्तिराज की नायिका हाथ के आर्द्र प्रसाधन के मिटने के भय से उत्तरीय को नहीं पकड़ती, और वह उसी अवस्था में ग़वाक्ष की ओर दौड़ जाती है।

काचित्करार्द्रप्रतिकर्मभंगभयेन हित्वा पततुत्तरीयम्।
मज्जीरवाचालपदारविन्दा द्रुतं गवाक्षाभिमुखं चचाल।। १०।१३

चरित्र चित्रण :

नेमिनाथ महाकाव्य के संक्षिप्त कथानक में पात्रों की संख्या भी सीमित है। कथानायक नेमिनाथ के अतिरिक्त उनके पिता समुद्रविजय, माता शिवादेवी, राजीमती, उग्रसेन, प्रतीकात्मक सम्राट् मोह तथा संयम और दूत कैतन्व ही महाकाव्य के पात्र हैं। परन्तु इन सब की चरित्रगत विशेषताओं का निरूपण करने से कवि को समान सफलता नहीं मिली।

नेमिनाथ :

जिनेश्वर नेमिनाथ काव्य के नायक हैं। उनका चरित्र पौराणिक परिवेश में प्रस्तुत किया गया है जिससे उनके चरित्र के कतिपय पक्ष ही उद्घाटित हो सके हैं और उसमें कोई नवीनता भी दृष्टिगत नहीं होती। वे देवोचित विभूति तथा शक्ति से सम्पन्न हैं। उनके धरा पर अवतीर्ण होते ही समुद्रविजय के समस्त शत्रु म्लान हो जाते हैं। दिक्कुमारियाँ उनका सूतिकर्म करती हैं तथा जन्माभिषेक सम्पन्न करने के लिये स्वयं सुरपति इन्द्र जिनगृह में आता है। पाञ्चजन्य को फूँकना तथा शक्तिपरीक्षा में षोडशकला सम्पन्न श्रीकृष्ण को पराजित करना उनकी अनुपम शक्तिमत्ता के प्रमाण है।

नेमिनाथ वीतराग नायक हैं। यौवन की मादक अवस्था में भी वैषयिक सुखभोग उन्हें अभिभूत नहीं कर पाते। कृष्णपत्नियाँ नाना प्रलोभन तथा युक्तियाँ देकर उन्हें वैवाहिक जीवन में प्रवृत्त करने का प्रयास करती हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि वैषयिक सुख परमार्थ के शत्रु हैं। उनसे आत्मा उसी प्रकार तृप्त नहीं हो सकती जैसे जलराशि से सागर अथवा काठ से अग्नि। उनके विचार में धर्मोषधि को छोड़कर कामातुर मूढ़ ही नारी रूपी औषध का सेवन करता है। वास्तविक सुख ब्रह्मलोक में ही विद्यमान है।

हितं धर्मौषधं हित्वा मूढ़ाः कामज्वरार्दिताः।
मुखप्रियमपथ्यन्तु सेवन्ते ललनौषधम्।।९।२४
आत्मा तोषयितुं नैव शक्यो वैषयिकैः सुखै :।
सलिलैरिव पाथोधिः काष्ठैरिव धनञ्चयः।।९।२५
अनन्तमक्षयं सौख्यं भुज्झा नो ब्रह्मसद्मनि।
ज्योतिःस्वरूप एवायं तिष्ठत्यात्मासनातनः।।९।२६

नेमिनाथ पितृवत्सल पुत्र हैं। माता के आग्रह से वे, इच्छा न होते हुए भी केवल उनकी प्रसन्नता के लिए विवाह करना स्वीकार लेते हैं। किन्तु वधू-गृह में भोजनार्थ वध्य पशुओं का आर्त्त स्वर सुनकर उनका निर्वेद प्रबल हो जाता है और वे विवाह से विमुख होकर प्रव्रज्या ग्रहण कर लेते हैं।

समुद्र विजय – यदुपति समुद्रविजय कथानायक नेमिनाथ के पिता हैं। उनमें राजोचित समूचे गुण विद्यमान हैं। वे रूपवान, शक्तिशाली, ऐश्वर्यसम्पन्न

तथा प्रखर मेधावी हैं। उनके गुण अलंकरण मात्र नहीं हैं, वे व्यावहारिक जीवन में उनका उपयोग करते हैं (शक्तेरनुगुणाः क्रियाः १।३९)।

समुद्र विजय तेजस्वी शासक हैं। उनके बन्दी के शब्दों में अग्नि तथा सूर्य का तेज भले ही शान्त हो जाये, उनका पराक्रम सर्वत्र अप्रतिहत है।

विध्यायतेऽम्भसा वह्निः सूर्योऽब्देन पिधीयते।
न केनापि परं राजंस्वत्तेजः परिहीयते।। ७।२५

सिंहासनरुढ़ होते ही उनके शत्रु निष्प्रभ हो जाते हैं। फलतः शत्रु लक्ष्मी ने उनका इस प्रकार वरण किया जैसे नवयौवना बाला विवाहवेला में पति का (१।३८)। उनका राज्य पाशविक बल पर आधारित नहीं है। केवल क्षमा को नपुंसकता तथा निर्बाध प्रचण्डता को अविवेक मानकर, इन दोनों के समन्वय के आधार पर ही वे राज्य-संचालन करते हैं। 'न खरो न भूयसा मृदुः' उनकी नीति का मूलमन्त्र है।

क्लीबत्वं केवलौ क्षान्तिश्चण्डत्वमविवेकिता।
द्वाभ्यामतः समेताभ्यां सोऽर्थसिद्धिममन्यत।।१।४३

प्रशासन के चारू संचालन के लिये उन्होंने न्यायप्रिय तथा शास्त्रवेत्ता मंत्रियों को नियुक्त किया है (१।४७)। उनके स्मितकान्त ओष्ठ मित्रों के लिये अक्षय कोश लुटाते हैं तो उनकी भ्रूभंगिमा शत्रुओं पर वज्रपात करती है।

वज्रदण्डायते सोऽयं प्रत्यनीकमहीभुजाम्।
कल्पद्रुमायते कामं पादद्वन्द्वोपजीविनाम्।।१।५२

प्रजाप्रेम समुद्रविजय के चरित्र का एक अन्य गुण है। यथोचित कर-व्यवस्था से उसने सहज ही प्रजा का विश्वास प्राप्त कर लिया है।

आकाराय ललौ लोकाद् भागधेयं न तृष्णया। १।४५

समुद्रविजय पुत्रवत्सल पिता हैं। पुत्र-जन्म का समाचार सुनकर उनकी बाछें खिल जाती हैं। पुत्र-प्राप्ति के उपलक्ष्य में वे मुक्तहस्त से धन वितरित करते हैं, बन्दियों को मुक्त कर देते हैं तथा जन्मोत्सव का ठाटदार आयोजन करते हैं, जो निरन्तर बारह दिन तक चलता है।

समुद्रविजय अन्तस् से धार्मिक व्यक्ति हैं। उनका धर्म सर्वोपरि है। आर्हत-धर्म उन्हें पुत्र, पत्नी, राज्य तथा प्राणी से भी अधिक प्रिय है।

प्राणेभ्योऽपि धनेभ्योऽपि योषिद्भ्योऽप्यधिकं प्रियम्।
सोऽमंस्त मेदिनीजानिर्विशुद्धं धर्ममार्हतम्।।१।४२

इस प्रकार समुद्रविजय त्रिवर्गसाधन में रत हैं। इस सुव्यवस्था तथा न्यायपरायणता के कारण उनके राज्य में समय पर वर्षा होती है, पृथ्वी रत्न उपजाती है तथा प्रजा चिरजीवी है। और वह स्वयं राज्य को इस प्रकार निश्चिन्त होकर भोगते हैं जैसे कामी कामिनी की कंचन काया को।

काले वर्षति पर्जन्यः सूते रत्नानि मेदिनी।
प्रजाश्चिराय जीवन्ति तस्मिन् भुञ्जति भूतलम्।।१।४४
सम्प्रद्धमभजद्राज्यं स समस्तनयामलम्।
कामीव कामिनीकायं स समस्तनयामलम्।।१५४

राजीमती – राजीमती काव्य की अभागी नायिका है। वह शीलसम्पन्न तथा अतुल रूपवती है। उसे नेमिनाथ की पत्नी बनने का सौभाग्य मिलने लगा था, किन्तु क्रूर विधि ने, पलक झपकते ही उसकी नवोदित आशाओं पर पानी फेर दिया। विवाह में भोजनार्थ भावी व्यापक हिंसा से उद्विग्र होकर नेमिनाथ दीक्षा ग्रहणकर लेते हैं। इस अकारण निकरारण से राजीमती स्तब्ध रह जाती है। बन्धुजनों के समझाने-बुझाने से उसके तप्त हृदय को सान्त्वना तो मिलती है, किन्तु उसका जीवन-कोश बीत चुका है। अन्ततः वह केवलज्ञानी नेमिनाथ की देशना से परमपद को प्राप्त करती है।

उग्रसेन – भोजपुत्र उग्रसेन का चरित्र मानवीय गुणों से ओतप्रोत है। वह उच्चकुलप्रसूत नीतिकुशल शासक है। वह शरणागत वत्सल, गुणरत्नों की निधि तथा कीर्तिलता का कानन है। लक्ष्मी तथा सरस्वती, अपना परम्परागत द्वेष छोड़कर उसके पास एक साथ रहती है। विपक्षी नृपगण उसके तेज से भीत होकर कन्याओं के उपहारों से उसका रोष शान्त करते हैं।

अन्य प्रात्र – शिवादेवी नेमिनाथ की माता है। काव्य में उसके चरित्र का पल्लवन नहीं हुआ है। प्रतीकात्मक सम्राट मोह तथा संयम राजनीतिकुशल शासकों की भांति आचरण करते हैं। मोहराज दूत कैतव को भेजकर संयम नृपति को नेमिनाथ का हृदय दुर्ग छोड़ने का आदेश देता है। दूत पूर्ण निपुणता

से अपने स्वामी का पक्ष प्रस्तुत करता है। संयमराज का मन्त्री शुद्ध विवेक दूत की उक्तियों का मुँह तोड़ उत्तर देता है।

प्रकृति-चित्रण – नेमिनाथकाव्य के विस्तृत फलक पर प्रकृति को व्यापक स्थान प्राप्त हुआ है। वस्तुतः नेमिनाथ महाकाव्य को भावसमृद्धि तथा काव्यमत्ता का प्रमुख कारण इसका मनोरम प्रकृति-चित्रण है। कीर्त्तिराज ने महाकाव्य के अन्य पक्षों की भाँति प्रकृति-चित्रण में भी अपनी मौलिकता का परिचय दिया है। कालिदासोत्तर महाकाव्यों के द्वारा नायक-नायिकाओं के विलासितापूर्ण चित्र अंकित करने की परिपाटी है। प्रकृति के आलम्बन-पक्ष के प्रति वाल्मीकि तथा कालिदास का सा अनुराग अन्य संस्कृत कवियों में दृष्टिगोचर नहीं होता। कीर्त्तिराज ने यद्यपि विविध शैलियों में प्रकृति का चित्रण किया है, किन्तु प्रकृति के सहज-स्वाभाविक चित्र प्रस्तुत करने में उनका मन अधिक रमा है और इन स्वाभावोक्तियों में ही उनकी काव्यकला का उत्कृष्ट रूप व्यक्त हुआ है।

प्रकृति के आलम्बन पक्ष के चित्रण में कीत्तिराज ने सूक्ष्म पर्य्यवेक्षण का परिचय दिया है। वर्ण्यविषय के साथ तादात्म्य स्थापित करने के पश्चात् प्रस्तुत किये गये ये चित्र अद्‌भुत सजीवता से स्पन्दित हैं। हेमन्त में दिन क्रमशः छोटे होते जाते हैं तथा कुहासा उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। उपमा को सुरुचिपूर्ण योजना के द्वारा कवि ने हेमन्तकालीन इस प्राकृतिक तथ्य का मार्मिक चित्र अंकित किया है।

उपययौ शनकैरिह लाघवं दिनगणो खलराग इवानिशम्।
ववृधिरे च तुषारसमृद्धयोऽनुसमयं सुजनप्रणया इव।।८।४८

शरत्कालीन उपकरणों का यह स्वाभाविक चित्र मनोरमता से ओतप्रोत है।

आपः प्रसेदुः कलमा विपेचुर्हंसाश्चुकूजुर्जहसुः कजानि।
सम्भूय सानन्दमिवावतेरुः शरद्‌गुणाः सर्वजलाशयेषु।।८।८२

इस श्लेषोपमा में शरत् का समग्र रूप उजागर करने में कवि को आशातीत सफलता मिली है।

रसविमुक्तविलोलपयोधरा हसितकाशलसत्पलितांकिता।
क्षरित-पक्त्रिम-शालिकणद्विजा जयति कापि शरज्जरती क्षितौ।।८।४३

पावस में दामिनी की दमक, वर्षा की अविराम फुहार तथा शीतल बयार मादक वातावरण की सृष्टि करती हैं। पवन झकोरे खाकर मेघमाला, मधुरमन्द्र गर्जना करती हुई गगनांगन में घूमती फिरती है। वर्षाकाल के इस सहज दृष्य को काव्य में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है। उपमा के प्रयोग ने भावाभिव्यक्ति को समर्थता प्रदान की है।

क्षरदभ्रजला कलगर्जिता सचपला चपलानिलनोदिता।
दिवि चचालनवाम्बुदमण्डली गजघटेव मनोभवभूपतेः।।८।३८

नेमिनाथमहाकाव्य में पशुप्रकृति के भी अभिराम चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। ये एक ओर कवि की सूक्ष्म निरीक्षणशक्ति के साक्षी हैं और दूसरी ओर उसके पशुजगत् की चेष्टाओं के गहन अध्ययन को व्यक्त करते हैं। हाथी का यह स्वभाव है कि वह रात भर गहरी नींद सोता है। प्रातःकाल जागकर भी वह अलसाई आँखों को मस्ती से मूँदे पड़े रहता है किन्तु बार-बार करवटें बदल कर पादश्रृंखला से शब्द करता है जिससे उसके जगने की सूचना गजपालों को मिल जाती है। निम्नोक्त स्वभावोक्ति में यह गजप्रकृति साकार हो उठी है।

निद्रासुखं समनुभूय चिराय रात्रा –
वुद्भूतश्रृंखलारवं परिवर्त्य पार्श्वम्।
प्राप्य प्रबोधमपि देव! गजेन्द्र एव
नोन्मीलयत्यलसनेत्रयुगं मदान्धः ।।२।५४

व्याध के मधुरगीत के वशीभूत होकर, अपनी प्रियाओं के साथ वन में चौकड़ी भरते हुए हरिणों का हृदयग्राही चित्र इस प्रकार अंकित किया गया है।

कलगीतिनादरसरंगवेदिनो हरिणा अमी हरिणलोचने वने।
सह कामिनीभिरलमुत्पतन्ति हे, परिपीतवातपरिणोदिता इव।।१२।११

हासकालीन महाकाव्य-प्रवृत्ति के अनुसार कीर्त्तिराज ने प्रकृति के उद्दीपन रूप में प्रकृति मानव की भावनाओं को उद्वेलित करती है। प्रस्तुत पंक्तियों में स्मरपटहसदृश धनगर्जना को विलासी जनों की कामाग्नि की प्रदीप्त करते हुए चित्रित किया गया है जिससे वे रणशूर कामरण में पराजित होकर प्राणवल्लभाओं की मनुहार करने में प्रवृत्त हो जाते हैं।

स्मरपतेः पटहानिव वारिद्रान्
निनदतोऽथ निशम्य विलासिनः।
समदना न्यपतन्नवकामिनी-
चरणयो रणयोगविदोऽपि हि।।८।३७

उद्दीपन पक्ष के इस वर्णन में प्रकृति पृष्ठभूमि में चली गयी है और प्रेमी युगलों का भोग-विलास प्रमुख हो गया है, किन्तु परम्परा से ऐसे वर्णनों की गणना उद्दीपन के अन्तर्गत ही की जाती है।

प्रियकरः कठिनस्तनकुम्भयोः प्रियकरः सरसार्तवपल्लवैः।
प्रियतमां समबीजयदाकुलां नवरतां वरतान्तलतागृहं।।८।२३

नेमिनाथ काव्य में प्रकृति का मानवीकरण भी हुआ है। प्रकृति पर मानवीय भावनाओं तथा कार्यकलापों का आरोप करने से वह मानव की भाँति आचरण करती है। प्रातःकाल सूर्य के उदित होते ही कमलिनी विकसित हो जाती है और भ्रमरगण उसका रसपान करने लगते है, इसका चित्रण कवि ने सूर्य पर नायक, कमलिनी में नायिका तथा भ्रमरगण पर परपुरुष का आरोप करके किया है। अपनी प्रेयसी को पर पुरुषों से चुम्बित देखकर सूर्य क्रोध से लाल हो जाता है तथा कठोर पादप्रहार से उस व्यभिचारिणी को दण्डित करता है।

यत्र भ्रमद्भ्रमरचुम्बितानना-
मवेक्ष्य कोपादिव मूर्न्धि पद्मिनीम्।
स्वप्रेयसौं लोहितमूर्तिमावहन्
कठोरपादैर्निजधान तापनः।।२।४२

निम्नलिखित पद्म में लताओं की प्रगल्भा नायिकाओं के रूप में चित्रित किया गया है जो पुष्पवती होती हुई भी तरुणों के साथ बाह्य रति में लीन हो जाती हैं।

कोमलांगयो लताकान्ताः प्रवृत्ता यस्य कानने।
पुष्पवत्योऽयहो चित्रं तरुणालिंगनं व्यधुः।।१।३१

कतिपय स्थलों पर प्रकृति का आदर्श रूप चित्रित किया गया हैं। ऐसे प्रसंगों में प्रकृति निसर्गविरुद्ध आचरण करती है। जिनजन्म के अवसर पर प्रकृति ने अपने स्वभावगत विशेषताओं को छोड़कर आदर्श रूप प्रकट किया है।

सपदि दशदिशोऽत्रामेयनैर्मल्यमापुः

समजनि च समस्ते जीवलोके प्रकाशः।।

अपि ववुरनुकूला वायवो रेणुवर्ज

विलयमगमदापद् दौस्थ्यदुःखं पृथिव्याम्।।३।३९

प्रकृतिचित्रण में कीर्त्तिराज ने परिगणनात्मक शैली का भी आश्रय लिया है। निम्नोक्त पद्य में विभिन्न वृक्षों के नामों की गणना मात्र कर दी है।

सहकारएष खदिरोऽयमर्जुनोऽयमिमौ पलाशबकुलौ सहोद्गतौ।

कुटजावमू सरल एष चम्पको मदिराक्षि शैलविपिन गवेष्यताम्।।१२।१३

काव्य में एक स्थान पर प्रकृति स्वागतकर्ता के रूप में प्रकट हुई है।

रचयितुं ह्यु चितामतिथिक्रियां पथिकमाह्वयतीव सगौरवम्।

कुसुमिता फलिताभ्रवणावली सुवयसां वयसां कलकूजितैः।।८।१८

इस प्रकार कीर्तिराज ने प्रकृति के विविध रूपों का चित्रण किया है। ह्रासकालीन संस्कृत महाकाव्यकारों की भाँति उन्होंने प्रकृति चित्रण में यमक की योजना की है। किन्तु उनका यमक न केवल दुहरूता से मुक्त है अपितु इससे प्रकृति वर्णनों की प्रभावशालिता में वृद्धि हुई है।

क्रमशः

सिंहल की राजकन्या

सुदर्शना

आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.

अपने पट्ट घोड़े का आकस्मिक आना, मनुष्य की भांति वन्दन-विनय करना एवं अत्यन्त हर्षोल्लास से पुलकित होना जान विस्मित हो महाराजा जितशत्रु ने कहा भगवन्! इसमें कोई शक नहीं कि आपकी परम कल्याणी पावनवाणी से पशु भी बोध पाते हैं। आज तक कई अद्‌भुत प्रसंग और विचित्र घटनाएं सुनी देखी हैं, लेकिन हमारे इस घोड़े के इतने हर्ष प्रदर्शन का कारण क्या होगा? हम तो यह जान भी नहीं सकते आपकी कृपा के बिना। तो .... कृपा.... अनुकम्पा फरमाएं कि क्या वजह है?

राजन्! इसका कारण यह है कि हमारा और इस घोड़े का पुराना सम्बन्ध है।

ओह प्रभु! आपका और इस घोड़े का?

हाँ, राजा! वैसे तो अनादि संसार में जीवों का जीवों से विभिन्न सम्बन्ध बनता बिगड़ता ही रहता है। प्रायः संसार के सभी जीव कई बार कई प्रकार से अपने सम्बन्ध में आ जाते हैं। संसार के सम्बन्ध बिडम्बना ही पैदा करते हैं। आत्मा के सम्बन्ध अमरता की राह पर चलने को प्रेरित करते हैं।

कृपावतार! आपका व घोड़े का सम्बन्ध कृपाकर फरमाइये ताकि हम पर उपकार हो और हमें कुछ पाने का बल या योग्यता मिले।

परमात्मा ने भरी पूरी पर्षदा में इस घोड़े की पुरानी दास्तान छेड़ी। जिसे देव-मनुष्य ही नहीं, जानवर भी चौकन्ने हो सुनने लगे।

इस भरत की धरती पर पद्मिनी खंड नाम के नगर में एक सेठजी रहते थे। वे परम धार्मिक, उदार, धर्म कार्य में कुशल, धर्म करणी में सदा अग्रणी और प्रभावशाली थे। यही कारण था कि सभी उनको धर्मश्रेष्ठी कहते थे।

उसी नगर में विपुल समृद्धि और विशाल परिवार वाले सागरदत्त नाम के सेठ जी रहते थे। वे दाक्षिण्य, दयालुता, सरलता व उदारता आदि गुणों के कारण आदर के पात्र बने।

सागरदत्त सेठ को धर्म सेठजी में परिपात होने से प्रगाढ़ता को पाया था।

संगत की रंगत से सागरदत्त सेठ को जैन धर्म पर आदर हुआ। धर्म श्रेष्ठी ने अच्छे अच्छे संयोग सागर सेठ को दिये। मन्दिर उपाश्रय आदि धर्मस्थानों में वे अपने साथ उन्हें ले जाते और वे धर्म का मर्म समझने लगे । क्रमशः उनके गुणों का विकास हुआ।

सागर सेठजी ने पहले बहुत सारा धन खर्च कर एक बहुत बड़ा शिवमंदिर बनवाया था। पूजा आदि की कायमी व्यवस्था उन्होंने कर रखी थी। कुछ प्रबन्धक नियुक्त किये थे और पुजारी लोग पूजा आदि का कार्यभार सम्हालते थे। इसके अतिरिक्त जरूरी सारी सामग्री सेठजी के घर में आती थी।

धर्मसेठजी से अनेक बार तत्त्वज्ञान की आध्यात्मिक बातें सुनकर सागर सेठजी की तत्त्व पर रुचि हुई और वे मित्र सेठ के साथ मुनिराजों के प्रवचन सुनने जाने लगे।

आत्मा की वृत्ति-प्रवृत्ति, स्थिति उपस्थिति, द्रव्य-पर्याय आदि के बारे में कभी कहीं उन्होंने सुना नहीं था। गृहस्थों के उचित धर्म पर उन्हें निष्ठा हुई और वे दानादि धर्म में प्रयत्नशील रहने लगे।

एक बार प्रभावक आचार्य महाराज पधारे थे। प्रवचन का प्रभाव आत्मा की गहराई में उतर जाता था। भाविक स्त्री पुरुषों का उपाश्रय में मेला लगता था। लोग उपदेश सुनकर धन्यता का अनुभव करते थे। वहाँ उन्होंने सुना।

जो कारिज्जइ जिणहरं, जियाणं जियरागदोस-मोहाणं।

सो पावइ अन्नभवे, सुलहं धम्मवर-रयणं।।

अर्थात् राग-द्वेष और मोह को जीतने वाले भगवान जिनेश्वरों के मंदिरों का जो निर्माण कराते हैं, वे अन्य भव में धर्मरूपी रत्न को खूब सरलता से पा जाते हैं। यावत् उसके तमाम दुःखों का अन्त आता है। इत्यादि उपदेश सुनकर उन्हें खूब आनन्द हुआ और वे सोचने लगे कि मेरे पास अनर्गल द्रव्य है तो मैं यदि जिनेन्द्र भगवंत का मंदिर बनवाऊं तो कितना अच्छा ? मैं भी सुन्दर, भव्य और प्रभावक जिनालय करवाऊंगा।

जो कारिज्जइ जिणहरं, जियाणं जियरागदोस-मोहाणं।
सो पावइ अन्नभवे, सुलहं धम्मवर-रयणं।।

इत्यादि शब्द उनके कानों में सदा गूंजते रहते। उनको विचार आता कि अनादि संसार में अनादि से भटकते अनादि इस जीव ने अनन्त सम्बन्ध किया और हरेक सम्बन्ध कायम करने लिए जिनमंदिर बनवाना चाहिये । कितने आत्मा प्रभु के पूजन दर्शन कर कल्याणगामी-कल्याणकामी बनेंगे। कितने कितने वर्षों तक उस मंदिर मेे धर्म होगा और मुझे कितना लाभ होगा, प्रभु के वंदन-पूजन, स्तवन, नमन से कितने जीव धन्य बनेंगे?

उनकी यह भावना जान धर्मश्रेष्ठी ने उनकी भावना और समझ को सराहा। उनके उत्साह व उदारता को अनेक गुना बढ़ाया।

धर्मसेठ की सलाह-समझ और सामर्थ्य से सागरदत्त सेठ ने अपनी धारणा से ज्यादा महान्, भव्य और मनोहर जिन मंदिर बंधवा कर महामहोत्सव पूर्वक प्रतिष्ठा करवाई। उनको श्री जिनोपासना में ऐसा आनन्द आने लगा कि शिव मंदिर जाने का क्रम छूट ही गया।

मनुष्य को कुछ न कुछ तो चाहिये ही। वह कहीं से भी खोज निकालेगा। बहुत बढ़िया प्रभु नहीं मिलेंगे तो कुछ कम सही कुछ और कम सही। भगवान, मंदिर कुछ आधार, आत्मा को आसरा तो अवश्य चाहिये ही। आलम्बन तो चाहिये ही।

जितनी अच्छाई मनुष्य पायेगा उतनी ही बुराई छूटेगी। जितना बढ़िया लेगा उतना घटिया छोड़ेगा भी। जितना ऊंचा उठेगा उतना नीचा छूटेगा ही।

सागर सेठ ने जनसाधारण से साधारण आलंबन पाये, किन्तु जहाँ सूझ और समझ बढ़ी वहां पसंदगी में भी फर्क आया। वीतराग को पाने के बाद वीतरागदशा पाने की अभिलाषा आ जाती है, उसे क्या चाहिये? जो छोड़ने की कोशिश में है वह क्या पकड़ेगा? जिसे अपना ज्ञान हो गया वह ज्ञानी के सिवा किसी से रीझेगा नहीं। जिसको अपना पता मालूम है वह रास्ता भूलेगा तो भी घर तो पहुंचेगा ही। जिसे अपना पता नहीं मालूम, वह चाहे जितना बढ़िया रास्ता चुने वह ठिकाने पहुंच नहीं सकता।

सागर सेठजी अपने में मस्त थे। उनका ज्यादातर समय जिन मंदिर में ही बीतता था।

शिवालय के प्रबन्धक और सेठजी के सगे सम्बन्धी लोग सागरदत्त सेठजी की ईर्ष्या और अर्थहीन चर्चा करने लगे। पर इससे ज्यादा वे कुछ कर नहीं सकते थे।

शीतकाल पूर्ण होने को था। शिवालय का वार्षिक दिन आने को था। इस निमित्त प्रबन्धकों ने विशेष आयोजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे। मुख्य सेठ सागरदत्तजी को पधारने का आग्रह किया। सेठजी ने सोचा, चलो बहुत समय से गये नहीं हैं व्यवस्था आदि देख लेंगे। लोगों को भी संतोष होगा और वे उस दिन काफी कुछ कार्यक्रम पूर्ण होने पर पहुंचे। सेठजी के आने से कईयों को खुशी और कईयों को नाराजगी हुई। उन्हें आदर से बुलाया और बैठाया गया। सेठजी ने देखा तो मंदिर की व्यवस्था काफी बिगड़ चुकी थी। जहाँ तहाँ गन्दापन और दुर्गन्ध इस वार्षिक दिन के महोत्सव में भी दिखायी पड़ती थी। यों भी जिन मंदिर की स्वच्छता के बाद दूसरे मंदिरों का फर्क साफ ख्याल में आ ही जाता है। सेठजी इन विचारों में थे इतने में आरती की तैयारी होने लगी। जहाँ घी रखा जाता था सेठ वहां पहुंचे। वह स्थान गन्दा व चिकना हो गया था। आजू-बाजू की दिवालों को भी घी की उंगलियां लगा लगा कर, उंगलियाँ पोंछ पोंछ कर उसे बेहूदा बना दिया था। पुराने घी के पात्र में लटें पड़ गयी थी। जहां तहां निःशंक हो चलते पुजारियों के पैरों तले कुचली हुई लटों के कलेवर के समूह बड़ी सूग पैदा कर रहे थे। इन कलेवरों को ले जाने चीटियों की कतारें आ पहुंची थी। पुजारियों के निर्दय पैर उन पर बुरी तरह पड़ रहे थे। देखते और जानते हुए भी पुजारी इन बेचारे बेसहारा जीवों को पैरों तले रोंद रहे थे। लटों व चीटियों की चटनी जैसी हालत दया व घृणा पैदा करती थी। यह देख सेठजी से न रहा गया। वे बोल उठे अरे, अरे! जरा देखो तो सही, यह क्या कर रहे हो? तुम तो स्वयं भगवान के पूजक हो और अपने आपकी गिनती महात्माओं में कराते हो, फिर वे निर्दोष जीवों को इतनी निर्दयता से कुचलते हुए तुम्हें कुछ भी नहीं होता? यह कैसे बरदाश्त हो सकता है। धर्म का पहला पाठ ही दया है। धर्म का तो मूल ही अहिंसा है। क्या तुम यह नहीं जानते।

सेठजी ने जिनालय बंधवाया और वहीं सेवा-पूजा में समय बिताने और श्रद्धा निष्ठा रखते जान प्रबन्धकों को उन पर आदर तो था ही नहीं। सेठजी

ने जैसे धर्मान्तर कर बड़ा भारी पाप कर दिया हो। इस ढंग से ये लोग सोचते थे। पक्ष-विपक्ष की भावना भी फैली ही थी। प्रबन्धकों ने पुजारियों को चढ़ा रखा था। पुजारियों को सेठजी से कोई खास फायदा या डर भी नहीं था। सेठजी के शब्दों से वे उत्तेजित हो बोल उठे;

बकवास बन्द करिये। बहुत हो गया, आप बड़े धर्मात्मा और धर्म के जानकार हैं, ये बात सारी दुनिया जानती है। बड़े दयालु हो गये हैं। अभी तक तो यही सब अच्छा लगता था, अब हमें धर्म का सबक सिखाने आये हैं। धर्म तो आपके सिवा कोई जानता भी क्यो होगा? अपना खयाल करो अपना, समझे?

आक्रोशपूर्वक ऐसे निष्ठुर शब्द, वे लाल आँखें दिखाने और हाथों को उठा-उठाकर कहने लगे। जिससे सेठजी तो हक्के बक्के रह गये। उनका रौद्ररूप देखकर वे सहम से गये। कल तक जो हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना करते थे, उन सामान्य नौकर लोगों का यह व्यवहार देख सेठजी तो हैरान हो गये। इतने में एक नसेड़ी पुजारी गुर्राता हुआ आया और बोला- आइये, आइये! धर्म के देवता! आपको कीड़े-मकोड़ों पर बड़ी दया आती है क्यों? मालुम नहीं है आपको कि कीड़े तो यो ही मरते हैं। पैदा भी अनाप सनाप होते हैं। इसकी चिन्ता छोड़े। एक जमाना बीतने पर आप आज यहां हमें धरम पढ़ाने आये हैं। इतने दिन कहां गये थे? धरम हम खूब जानते है समझे! बड़े धर्मी बनकर घूमते हो, धर्म पर श्रद्धा तो है नहीं। जहाँ-तहाँ डोलते फिरते हो। खुद का धर्म तो छोड़ दिया और धर्मात्मा बन गये। हो गया कल्याण, जाओ यहां से घर का रास्ता लो।

सेठजी की तो हालत खराब हो गयी। वे बेचारे तो अपना बड़प्पन सम्भालने आये थे और दो दमड़ी के आदमी ने क्या का क्या कह दिया? कभी नहीं सुने शब्दों ने सेठजी की सारी स्वस्थता को हिला दिया। सेठजी की तो ऐसी तैयारी बिलकुल नहीं थी। उनके दिल पर मानो चोट लग गयी। बड़ी पीड़ा हुई उनकी आत्मा को। व्याकुल हो वे वहां से चल दिये और घर आये। पुजारियों के शब्द हथोड़े की तरह उनके सर में लगने लगे। वे यह दुःख किसी को कह भी ना सके। परिणाम यह हुआ कि उनका हृदय ही बन्द हो गया और

वे मृत्यु को प्राप्त हुए। आर्तध्यान में व्याकुलता से मृत्युपाने के कारण वे तिर्यंच की योनी में उत्पन्न हुए।

ओ राजा! भवसागर में अनेक भव करते, भटकते भटकते सागरदत्त सेठ का जीव फिलहाल तुम्हारा पट्ट अश्व हुआ है। दुर्ध्यान और मिथ्यात्व के पोषण से पशु का जीवन और उसी संस्कार से उसकी परम्परा चल पड़ी। हर भवों में पशु आदि अवतार पाया लेकिन वहां भी धर्म ने इसका साथ कभी नहीं छोड़ा, क्यों कि इसने धर्म किया था। हम चाहे एक बार करके धर्म को छोड़ भी दें तो भी धर्म हमें नहीं छोड़ेगा क्यों कि आत्मा को धर्म से व धर्म को आत्मा से नाता है और वह अटूट है। देखो, ये घोड़ा होने पर भी राजा का, उसमें भी पट्ट अश्व हुआ। धर्म ने इसे भी सारे उत्तम साधन प्राप्त करा दिये। सारी दुनिया दगा दे सकती है लेकिन धर्म कभी भी धोखा नहीं देगा।

पुण्य के योग से ही इस घोड़े ने जो 'कारिज्ज जिणहरं जिणाणं' इत्यादि जिनेन्द्र प्रभु के मंदिरों की महत्ता बताने वाले शब्दों को सुनकर जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त किया। बीते भवों को इसने देखे जाने। अब इसे जिनवचन की प्रतीति और वैराग्य प्राप्त हुआ है। सम्यक्त्व, सत्ज्ञान, साक्षात् हमारे दर्शन और हमारी वाणी आदि अमूल्य और दुर्लभ वस्तु की प्राप्ति से अश्व को अपार हर्ष व आतंकित आनन्द हो रहा है।

इसके अलावा आनन्द के अतिरेक का बहुत बड़ा कारण यह है कि जो जिनधर्म सेठ इसके मित्र थे, वह मैं स्वयं हूँ। इसके आयुष्य की अल्पता व प्रतिबोध का अवसर जान हम लम्बा विहार कर यहाँ आये हैं।

महाप्रभु की जय हो। भगवन्! आप कितने दयालु और उपकारी हैं। आपसे ही प्रतिबोधित और दीक्षित तीस हजार मुनिराज और पचास हजार साध्वियाँ विश्व पर अपार करुणा और उपकार बरसा रहे हैं। देखिये, देखिये प्रभु ये अश्व कुछ इशारा कर रहा है।

हाँ राजा! इसे कहना तो काफी है। सब हमारी समझ में है। जब जी स्वाधीन और साधन सम्पन्न होता है तब अज्ञान, कषाय और विषयादि में फंसता उलझता है। धर्म में चूकता और प्रमाद करता है। ऐसा अन्धा होता है कि उसे अपना हित तक नजर नहीं आता। जब वह पराधीनता की गहरी गर्त में पड़ता

है तब उसे पश्चाताप होता है, पुनः न चुकाने का संकल्प भी करता है। पुनः सुस्थिति के लिए प्रभु को प्रार्थना भी करता है। वह प्रार्थना फलती भी है। वह स्वाधीन और सम्पन्न बनता है और वापस प्रमाद में धर्म करना चूकता है। फिर पछताता है। यह चक्र चलता रहता है। मनुष्य को अच्छी खासी जबान मिलती है और उसका दुरुपयोग करता है। नतीजा यह निकलता है कि दुबारा जल्दी अच्छी जबान नहीं मिलती। यह घोड़े की पुण्यवानी है कि यह बिना बोले भी हमें अपने हृदय के भाव व्यक्त कर सकता है इंगित से यह जता रहा है कि-

भगवन्! धर्म की तमाम सामग्री - सुविधा मिलने पर भी इस शरीर से कुछ भी नहीं कर सकता हूं और तो कुछ हो नहीं सकता लेकिन मैं सम्पूर्ण सत्त्वनिष्ठ हो अनशन करना चाहता हूँ। मुझे अनशन करवा दो प्रभु! प्रत्याख्यान करवा दो।

राजा! इस घोड़े ने बहुत बड़ा ज्ञान पाया है। जिस तरह करोड़ो साल के अंधेरे को दिया पलभर में मिटा देता है त्योंही अनादिकाल के भी अज्ञान को ज्ञान पलभर में मिटा देता है। अब यह बड़ा भारी काम करने जा रहा है। थोड़े ही दिनों की आत्मसाधना से अब यह अपना सारा भविष्य सुधार लेगा।

यह सब सुनकर राजा आदि समस्त पर्षदा को खूब आनन्द हुआ। सबने धर्म का जयघोष किया। सबको प्रभु की असीम कृपा को देखने का मौका मिला। तथा जब स्वयं के कल्याण की जंखना जगती है तो एक घोड़ा भी कितना बड़ा साहस कर सकता है? कैसा पुरुषार्थ कर सकता है? इस बात की प्रेरणा मिली।

अश्व ने अनशन स्वीकार लिया। प्रभु का बहुत बहुत अहसान उपकार माना। समवसरण के बाहर एक सघन वृक्ष की छाया में निष्काम-शांत चित्तवाला हो वह अश्व आ बैठा और भगवान् मुनिसुव्रतस्वामी के स्मरण में उसका चित्त रमण करने लगा। प्रभु के उपकार को याद करता, नमस्कार महामंत्र का ध्यान धरता वह घोड़ा अपने भाग्य की सराहना करता प्रसन्नता से समय व्यतीत करने लगा। राजा व प्रजा ने घोड़े के सत्व और समझ की खूब खूब तारीफ की। प्रभुजी की महिमा गायी। लोगों का झुंड हमेशा वहां बना रहता और आत्मनिन्दा, दुष्कृत गर्हा, अपने किये पापों की निन्दा सत्कार्यों की

प्रशंसा तथा जिनेश्वर प्रभु के गुण गौरव की स्तवना सम्बन्धी गद्य-पद्य बोलते गाते जिसे सुन घोड़ा खूब ही प्रमुदित होता। इस घोड़े का प्रभुजी के साथ का पुराना सम्बन्ध जनता में बोध और बहुमान का विषय बन गया।

अश्व अब आत्मसाधना में सावधान हुआ। प्रभुजी के दर्शन से वन्दन से उसे अपार शांति और धर्म उपदेश से असीम तृप्ति मिलती थी। शुभभावपूर्वक नवकार स्मरण व अन्य मुख से श्रवण करते करते पन्द्रहवें दिन अति शांतिपूर्वक अश्व ने प्राण छोड़े और आठवें स्वर्ग में अति समृद्धिशाली देव हुआ।

एक व्यर्थ, अस्वस्थ या अयोग्य शरीर के बदले में अच्छा शरीर सामर्थ्य पाना कोई मरने की बात नहीं है।

मरने के नाम से जीव को कितना डर लगता है? लेकिन मौत है कहां? मरता है व्यक्तित्व, स्वरूप को तो कोई आंच नहीं आती। जो स्वरूप को भूल जाता और मात्र व्यक्तित्व को पहचनानता है उसके लिए मृत्यु अवश्यम्भावी है इसे रोकने का कोई उपाय नहीं है। सच यह है कि सदा जीवन्त पदार्थ आत्मा है जो कभी भी मरती नहीं। जो कभी जन्मी नहीं, जो करेगी नहीं। ये जन्म-मृत्यु तो आत्मा की लीला है, क्रीड़ा है। हां, बांधे हुए सम्बन्धों का अन्त आता है। जो मरा पाया जाता है वह तो पहले से ही आत्मा से अलग था। लेकिन हम अपनी ममता-माया के कारण असलियत का पता नहीं लगाते। कभी पता लगता है तो हम वहीं बात मानते हैं जो हमें पसंद होती है। मृत, मृत है और जीवन, जीवन है। जीवन कभी मरता नहीं। इसे कोई भी मार सकता है।

राजा आदि ने समारोह पूर्वक अश्व के शरीर की अन्तिम क्रिया की तथा वहां उसकी स्मृति निमित्त स्तूप बनाया। देव बनते ही घोड़े ने अवधिज्ञान से अपनी पूर्व अवस्था के साथ प्रभू के अपूर्व उपकार को भी जाना। उसके इर्द-गिर्द इकट्ठे हुए देव-देवियों को उसने अपनी सारी बात बता दी। नाच कूदकर प्रभु के उपकार को भक्ति-कृतज्ञता पूर्वक सबके सामने गाया। देव-देवियां भी भक्ति से प्रभावित हो डोलने झूमने और ताल देने लगे। वह देव बोला उन परमात्मा के प्रताप को आप स्वयं महसूस करें। चलो, मेरे साथ चलो और वह सुन्दरता के समन्दर जैसे देव-देवियों के जबर्दस्त काफले को लेकर भृगुकच्छ स्थित प्रभु जी के समवसरण में दौड़ आया। पुष्प, मणि, मोती और

रत्नों की वर्षा की। अनन्त उपकारी प्रभु श्री मुनिसुव्रतस्वामी की खूब खूब सराहना की। बहुत बहुत गुण गाये। भावभरी वन्दना की और भावोल्लास से नाचने लगा। दूसरे भी देव-देवियां नृत्य में शरीक हुए, वीणा, वेणु, ताल, मृदंग आदि दिव्य वाद्य बजने लगे। साज और आवाज के साथ साथ मानो धरती और आकाश भी ताल देने लगे। भक्ति और आनन्द सारे वायुमण्डल में फैल गये। भक्तों की भींड़ जम गयी।

आखिर में करबद्ध हाथ जोड़े सिर नवास्तुति करते वह बोला;

ओ कृपावतार भगवान्। आप इस अपार संसार समुद्र में अद्‌भुत जहाज हैं। ओ शरणागत वत्सल! जहां तक हम आपका शरण नहीं स्वीकार करते वहाँ तक ही हमें दुःख और विडम्बना सता सकते हैं। आपका शरण मिलते ही प्राणी निर्भय और निरापद हो जाते हैं।

अनादिकालीन आत्मघाती महारोगों को मिटाने वाले आप मौजूद होते हुए भी बेचारे मोहमूढ़ लोग जहां तहां भटकते और अपनी पीड़ा को बढ़ाते रहते हैं।

जो ज्ञान के सागर। परमोपकारी! आपकी स्तुति कैसे की जाय। कहां आपके अनिर्वचनीय गुण और कहां हम सामान्य भाव को भी प्रगट करने में असमर्थ अबोध, कुण्ठितमति, लालसा के कारण जटिल! आपके अमृतबोध से एक घास खाने वाला घोड़ा भी कैसा सौभाग्यशाली और प्रभावी देव हो गया? हे प्रभु! आप दयालु ने तो मेरा सारा भविष्य ही सुधार दिया डूबते को आधार दिया बस अब तो तार दो, आप तैरे हैं, मुझे भी मुक्ति दिला दो नाथ। एक यही अभिलाषा है और उसे आप ही पूर्ण कर सकते हैं। इत्यादि स्तुति करता, बार-बार प्रसन्नवदन-प्रभु के दर्शन-वन्दन करता, अपने आपको धन्य मानता वह देव-देवियों के साथ जैसे आया था वैसे ही स्वर्ग को चला गया। लोगों को अद्‌भुत जानकारी मिली। परमात्मा की परम कृपा और संसार की अथाह विचित्रता का थोड़ा सा परिचय हुआ।

श्री मुनिसुव्रतजी ने भी कुछ समय बाद वहां से विहार किया, करोड़ो जीवों को सद्‌बोध देते वे धरती को पावन करने लगे।

सम्मेतशिखर नाम के महापर्वत पर अनशन पूर्वक ध्यानस्थ हो ज्येष्ठ नवमी के दिन प्रभु निर्वाण पाये। सदा के लिए दुःख व संसार से छूट गये।

आज भी अनेक पुण्यात्मा मुनिसुव्रत स्वामी आदि तीर्थंकर भगवन्तों के पाँचों ही कल्याणक दिनों में उपवास आयम्बिल या एकाशन प्रमुख तप करते हैं। उन उन तीर्थंकरों की विशिष्ट आंगी-पूजा आदि कर उनके कल्याणक की बीस माला (नवकार वाली) फेर कर आराधना द्वारा अपनी आत्मा को धर्मध्यान से अधिवासित करते हैं। इससे पापवासना का अन्त आता है। वे संसार की विस्मयकारी सम्पत्ति और आत्मा की अद्भुत परिपूर्ण समृद्धि प्राप्त करते हैं।

सुदर्शना! प्रभुजी ने यहां अश्व को प्रतिबोध दिया तब से यह जगह अश्वावबोध के नाम से प्रसिद्ध हुई और तीर्थ का आदर पाई। प्रभुजी के चरणारविन्द से यह स्थान अनेक बार अलंकृत और उपास्य तो हुआ है। यहां कई मुनि मोक्ष भी पाये हैं। कोई ऐसा अतिशय है कि यहां अधर्मी जीव भी सरलता से धर्म पा जाते हैं।

शंख, चक्र, ध्वज, कुम्भ, अंकुश और कमल आदि चिन्हों से अंकित श्री जिनेश्वर प्रभु के चरण जहां भी स्थिर-स्थित हुए होते हैं वह भूमि भी तीर्थ बन जती है। देवों से अधिष्ठित हो कभी अतिशयशाली और चमत्कारी भी बन जाती हैं। वहां जाने से उत्तम वृत्ति और अच्छी प्रवृत्ति की प्रेरणा मिलती है, जो महान् और परमपावन कार्य का निमित्त भी बन जाती है।

यही कारण है कि भरत महाराजा ने अष्टापद पर्वत और शत्रुंजय गिरिराज पर महान और भव्य श्री जिनप्रासाद बनवाये।

श्री जिनमंदिर, जिन प्रतिमा, पूजा, यात्रा तथा स्नात्रादि महोत्सव स्वयं द्रव्यस्तव स्वरूप और भावस्तव का अमोघ कारण है।

सौम्य, शांत, शीतल और वीतराग मुद्रा वाली जिन प्रतिमाजी के दर्शन मात्र से अधर्मी जीव भी सद्विचार और सद्बोधि को उपलब्ध होता है। बड़े बड़े ज्ञानी भी जो भाव बड़ी व कड़ी साधना के बाद पाते हैं, वह सहृदय भक्त सहज में ही पा लेता है।

सुदर्शना! तूने भी यहां से तीसरे विजयाविद्याधरी के भव में रत्नसंचया नगरी में श्री शांतिनाथ प्रभु के महामन्दिर में ही श्रृद्धाबोधि और धर्म प्राप्त किये थे, यह तो तुझे स्वयं को भी अब याद हैं।

हाँ, हाँ प्रभु! नजर के सामने ही हुआ हो इस तरह सब बिलकुल ताजा है।

हाँ, वह शांत मुद्रा, आह्लादक वातावरण और भविकों की भक्ति-पूजा से कितनी प्रभावित हुई थी। तेरे विचारों का मूल में से परिवर्तन वहीं से तो हुआ था। तुझे ये विश्वास ही नहीं पक्का अनुभव हो चुका था कि नन्दनवन में घूमने-फिरने या पर्वतारोहण या जल क्रीड़ा आदि सैर विहार करने से कहीं अधिक आनन्द श्री अरिहंत भगवान की भक्ति से मिलता है। भाग्य-पुण्याई बढ़ती है। स्वभाव में पवित्रता सरलता आती है। वीतरागपना पाने को जी चाहता है।

सुदर्शना! एक ओर खास बात है कि जिनालय बनवाने के लिये केवल पैसा ही नहीं चाहिये किन्तु मंदिर बनवाने वाले में और गुण भी चाहिये, जो तुझमें हैं।

वो क्या प्रभु? कौन से गुण चाहिये?

हा, वत्से ! जाति, कुल, न्यायार्जित धन, गुरुओं का विनय आदि तो चाहियें ही साथ में वह मनुष्य स्वजनमान्य, भक्तिवान, राग-द्वेष से प्रायः दूर रहने वाला, सहनशील, दीर्घदृष्टा और अच्छी उदारतावाला होना भी बहुत जरूरी है। वह जनसमूह में प्रतिष्ठित भी चाहिये। यदि गुणहीन मनुष्य जिनालय बनवाता है तो उस पर तथा प्रायः उस मंदिर पर भी लोगों को ज्यादा आदर नहीं होता। जिन मंदिरों पर संघों का आदर होता है प्रायः वे मंदिर उन्नति के परम कल्याण रूप बनते हैं। लोभी मनुष्य ऐसे बड़े कार्य नहीं कर सकते। पैसे-पैसे के लिये मन को छोटा और गन्दा करने वाले, सामान की खरीद में कसर करने वाले और ज्यादा कसने वाले, शिल्पी, कारीगर आदि से उलझने और पाई पाई के लिये सरपच्ची या ओछे, शब्दों का प्रयोग करने वाले, जिनेश्वर परमात्मा के महालय की महानता को समझ ही नहीं पाये हैं।

ओह प्रभु ! आप कितने महान् हैं ? कैसे नापी जाय आपकी महानता को? कहां आपके उपकार की सीमा? ऐसे उत्तम कार्य में जो धन लगता है वहीं तो धन है, बाकी है मिट्टी, धूल–ये सर्वोत्तम जिनालय बनवाने से कितना आनन्द और तृप्ति मिलती है, यह मुझे मालूम है। फिर परलोक में धर्म कितनी सरलता-सुलभता से मिलता है। सारी दुनियां में दुर्लभ मात्र धर्म तो है। धन या धनी का नाश हो उससे पहले धन का फायदा उठा लेना चाहिये। भगवन् आप तो परम कृपालु और अन्तर्यामी हैं। आपने तो मेरी भावना को जगाया और सजाया है।

अतिभव्य, रमणीय, सुदृढ़ और अति विशाल जिनालय बनवा, उसमें श्री मुनिसुव्रत स्वामी की अति भव्य प्रतिमा बनवा आप श्रीजी के वरद करकमलों से ही अंजन क्रिया करवा प्रतिष्ठित करूँगी। आप श्री के पुण्य प्रताप से यह महाजिनप्रासाद मनुष्यों के ही नहीं, देवताओं के भी मन को मुग्ध करेगा। परम शांति शुभ आह्लाद, पुण्य प्रमोद और उत्तम क्रिया-विचार की प्रेरणा देगा। मैं कितनी पुण्यवती बनूंगी? मेरी आत्मा का एक एक शुभ, शुभ्र और शुद्ध होगा। भगवन् ! मुझे आशीष दीजिये, मैं इस महान कार्य में सफल बनूं।

गुरु महाराज ने वासक्षेपपूर्वक उसे आशीर्वाद दिया। श्री जिनशासन की जय जयकार की। घोषणा के साथ प्रवचन सभा उठी।

सुदर्शना, सुन्दरी, राजा जितशत्रु, ऋषभदत्त श्रेष्ठी आदि वहीं ठहरे और कहां, कैसे, किस प्रकार का जिनमंदिर बनवाना तथा उसमें कहां कहां कैसे-कैसे प्रतिमाजी स्थापन करने? क्या क्या विधि-विधान करने? आदि सारी बातें उन्होंने पूज्य आचार्य महाराज श्रीजी से समझ ली और उनकी प्रेरणा-सूचना अनुसार सारी रूपरेखा तैयार की।

गुरुवंदन आदि कर सब वापस लौटे। गुरुओं का उपदेश और उनकी कृपा को बारम्बार याद करने और सराहने लगे। धावमाता कमला को सब विस्तृत समाचार देने को सिंहलद्वीप के लिये रवाना किया।

इधर श्री विजयकुमार मुनि को केवलज्ञान की प्राप्ति के समाचार जानकर सुदर्शना ने भव्य महोत्सव किया जिसमें राजा, सेठजी एवं संघ ने उदारता से लाभ लिया। आनन्द रस की मानो बरसा होने लगी। एक महान् यौद्धा ने मोह को पछाड़कर सारा जगत जीत लिया था। उसकी महिमा और महानता को सबने बड़े भाव से गाया। कुछ अच्छा कार्य करने की स्वयं ने भी भावना भायी।

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:
   - Vol - 1 (satakas 1- 2) Price : Rs. 150.00
   - Vol - 2 (satakas 3- 6) 150.00
   - Vol - 3 (satakas 7- 8) 150.00
   - Vol - 4 (satakas 9- 11) 150.00
2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates Price : Rs. 100.00 (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India Price : Rs. 100.00
9. Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism Price : Rs.
10. Smt. Lata Bothra- The Harmony Within Price : Rs. 100.00
11. Smt. Lata Bothra- From Vardhamana- to Mahavira Price : Rs. 100.00

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari BeganiPrice : Rs. 50.00
5. Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira Price : Rs. 60.00

6. Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7. Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8. Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9. Dr. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10. Dr. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11. Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12. Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00

Bengali :

1. Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2. Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3. Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4. Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5. Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6. Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7. Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications

1. Dr. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2. Dr. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3. Dr. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4. Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5. Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6. K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

NAHAR
5B, Indian Mirror Street, Kolkata - 700 013
Phone: 2227- 5245/5240, Resi: 2246-7757

M/S. BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road, B-3/5 Gillander House,
Kolkata - 700 001, Ph: (O) 2230-8105/2139,

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Kolkata - 700 017, Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016, Ph: 2226-2418,

M/S. SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
"Indian Silk House Agencies"
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: (S) 2464-1186

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072, Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF **SOHANRAJ VINAYMATI SINGHVI**
30B, New Road, Alipore, RBI, Staff Quarter &
Gadges Road (Inside lane) Kolkata - 700 027

M/S. GLOBE TRAVELS
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071, Ph: (O) 2282-8181-4/8780

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

M/S. LALCHAND DHARAMCHAND
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001, Ph: 2230-2074/8958, 2230-3187

SUVGYA BOYED
340, Mill Road, Apt. # 1407, Etobicolse, Onterio m9 Cly8, 416-622-5583

M/S. COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street, Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047

SUNDERLAL DUGAR
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001, Ph: 2248-5146/6941/3350,

M/S. ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4,
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029

SAROJ DUGAR
34/1J, Ballygunge Circular Road, Kolkata - 700 019, Ph: 2475 1458

M/S. VEEKEY ELECTRONICS
29/1B, Chandni Chowk, 3rd floor, Kolkata - 700 013, Ph: 2237-6255

M/S. KRISHNA JUTE COMPANY
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001,Ph: 2230-0871/9372, 3022937172

M/S. ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Kolkata - 700073, Phone: 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001, Phone : 2220-5229/5121

M/S. MOUJIRAM PANNALAL
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001, Ph : 3288-8088/2248-8086,

M/S. ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033

M/S. NAKODA METAL
32A Braboume Road, Kolkata - 700 001, Ph: 2235-2076, 2235-5701

M/S. MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069,
PH: 2248 0229/7030/2920/4346

M/S. SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007, Ph: 2273-1766, 2268-8846

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive, Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,

V.S. JAIN
Royal Gems INC.632 Vine Street, Suit # 421
Cincinnati OH 45202Phone : 1-800-627-6339

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue, Savoy, IL 61874-9495, USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.), Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street, 5th Floor, Room No. 534-535,
Kolkata - 700 001, Phone: 2210-3239, 2210-3253

RANJIT SINGHI
P15, New C.I.T. Road, Kolkata - 700 073

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है, वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007, Phone: (G) 2268-0900

In the Sweet Memory of my mother, LATE SOVABOTI DUSAJ
Manilal Rajendra Kumar Dusaj
Mobil : 9331041011, 9830142192

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road, Kalkata - 700 019,
Ph: (2475-1109/6835

M/s. MUKUND JEWELLERS
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Ph: 2272-3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006, Ph: 2259-3885,

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road, Kolkata - 700 020, Ph: 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001, Phone: 2242-3870

M/S. INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES
40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M/S. M.L. CHOPRA & CO.
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1, PH : 2230 5059 / 2230 1130,

M/S. STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS
13/5, Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

SHIV KUMAR JAIN
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016, Ph: (O) 2287-7880, 2287-8663,

MAHENDRA TATER
45/4A, Chakraberia Road (S)Kolkata - 700 025

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 1, Ph: 2230-7162, 2231-5540,

TAPAN KUMAR SAHELA
Shiv Bhawan, Police Line Road, Bhagalpur - 812001,
Ph: 0641-2421091, 2301041

APARAJITA BOYED
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia, Howrah - 711 106,
Ph: 2665-3666/2272

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane, Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

M/S. BADALIA GEMS PVT. LTD.
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006, Ph: 2554-8999/8997

M/S. CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 2287-3450/3758, 2281-1690, 2290-0514/3450

जो एक को जानता है, वह सबको जानता है और
जो सबको जानता है वह एक को जानता है।
- **WITH BEST WISHES**

M/S. CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001,
Ph: 2230 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-256896

WITH BEST WISHES
22, Strand Road, 2nd Floor, Kolkata - 700 001, Phone : 22131484

BIKASH CHHAJER
M/S. SITAL GROUP OF COMPANIES
'Centre Point', 21, Hemanta Basu Sarani
2nd Floor, Room No. 226, Kolkata - 700 001, Ph: 2242-9265, 2210-9228,

KESARIA & CO.
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001, Ph: (O) 2248-8576/0669/1242

ARIHANT JEWELLERS
M/s. B.B. Enterprises
24 Ray Street, 2nd Floor, Kolkata - Ph: 3258-2284/9331030188

MANIK JAIN (Philatelic & numismatic)
One Moti Sil Street, Kolkata - 700 013
2228 8549, 2228 7777, Tele Fax : 2228 8888

In the memory of our father Late Surendra Singh Baid
SHRI HIREDRA SINGH BOYED
15/A, Chakraberia Road, Kolkata - 700 020 (M) 9831000458
SHRI RABINDRA SINGH BOYED (9231575198)
SHRI GYANENDRA SINGH BOYED (2363-1966)

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007,
Ph: 2268-8677, 2269-6097

MAHENDRA RAJ MEHTA
8, Brajadulal Street, Kolkata - 700 006, (M) : 9903052310

SHANTIPAL BHANSALI
23, N.S. Road 7th Floor Room No. 24, Ph: 2242 8633, (M) 9331023735

THE PRINCE OPTICAL CO.
72, Canning Street, Kolkata - 700 007, Ph : 2235 5544, 3022 0533

M/S. GEETA CATERERS
17M/1, Dover Terace, Kolkata - 700 019, Ph : 2461 8329, 9830051068

MOHANLAL JAIN & SONS.
9 India Exchange Place, Kolkata - 700 001, Ph: 2230 8255, 2230 8528

M/S. KESAVLAL MEHTA & COMPANY
154, Tarak Pramanik Road, Kolkata - 700 006, Ph: 2241 1163 (O)
48/33, Swiss Park, Kolkata - Ph: 3243 6469 (R)

M/S. TREND BYABAAR LTD.
Unit : Telbin Jute Mills, 24, N.S. Road, Kolkata - 700 001, Ph: 2231 2970/71/72 (O)

M/S. ROHINY PRINTERS
19/1B, Creek Row, Kolkata - 700 014, Ph: 2246 4610 (Press)
2216 5983, 2227 6510, 2446 4488

ज्ञानी के ज्ञान का सार यही है कि वह
किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करे।
अहिंसा और समता—यहीं शाश्वत धर्म है।
इसे समझे।

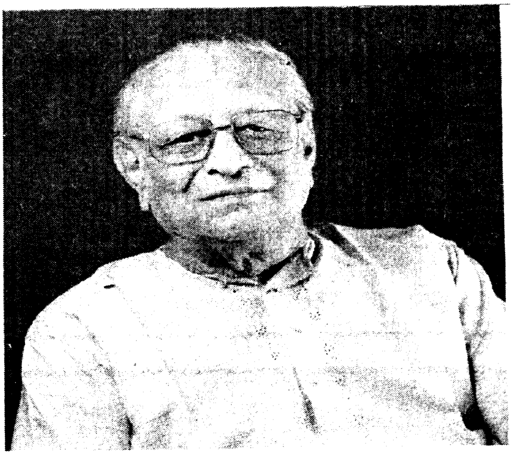

In the memory of my father

Late

Kantilal Srimal

Rabindra Srimal

Club Town
Block - 9 , Teghoria, VIP Road
Kolkata - 700 052
Phone : 2573 2152 / 2569 0230

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक
धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

M/S. B.W.M. INTERNATIONAL
&
BIKANER WOOLLEN MILLS

4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, (0151) 2522404, 2225400,

With Best Wishes

M/S.SURANA WOOLEN PVT. LTD.

67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills,
22201962, 22545065 Resi

With Best Wishes

M/S. WATERTECH ENGINEERS PVT. LTD.

ENVIRONMENTAL ENGINEERS & CONSULTANTS

1A, Raja Subodh Mullick Squre,
2nd Floor, Kolkata - 700 013
Phone : (033) 2237-5449, 2236-1229, 2221-9893, 2225-5346
Fax : 91-33-2221-9893, 91-33-2245-6558
e-mail : watertec@cal3.vsnl.net.in
Website : www.watertechengineers. com

BRANCH OFFICE : D - 110, NIRMAL MARKET, POWER HOUSE ROAD

ROURKELA - 769001, **ORISSA,**
TELEFAX : (0661) 2507352

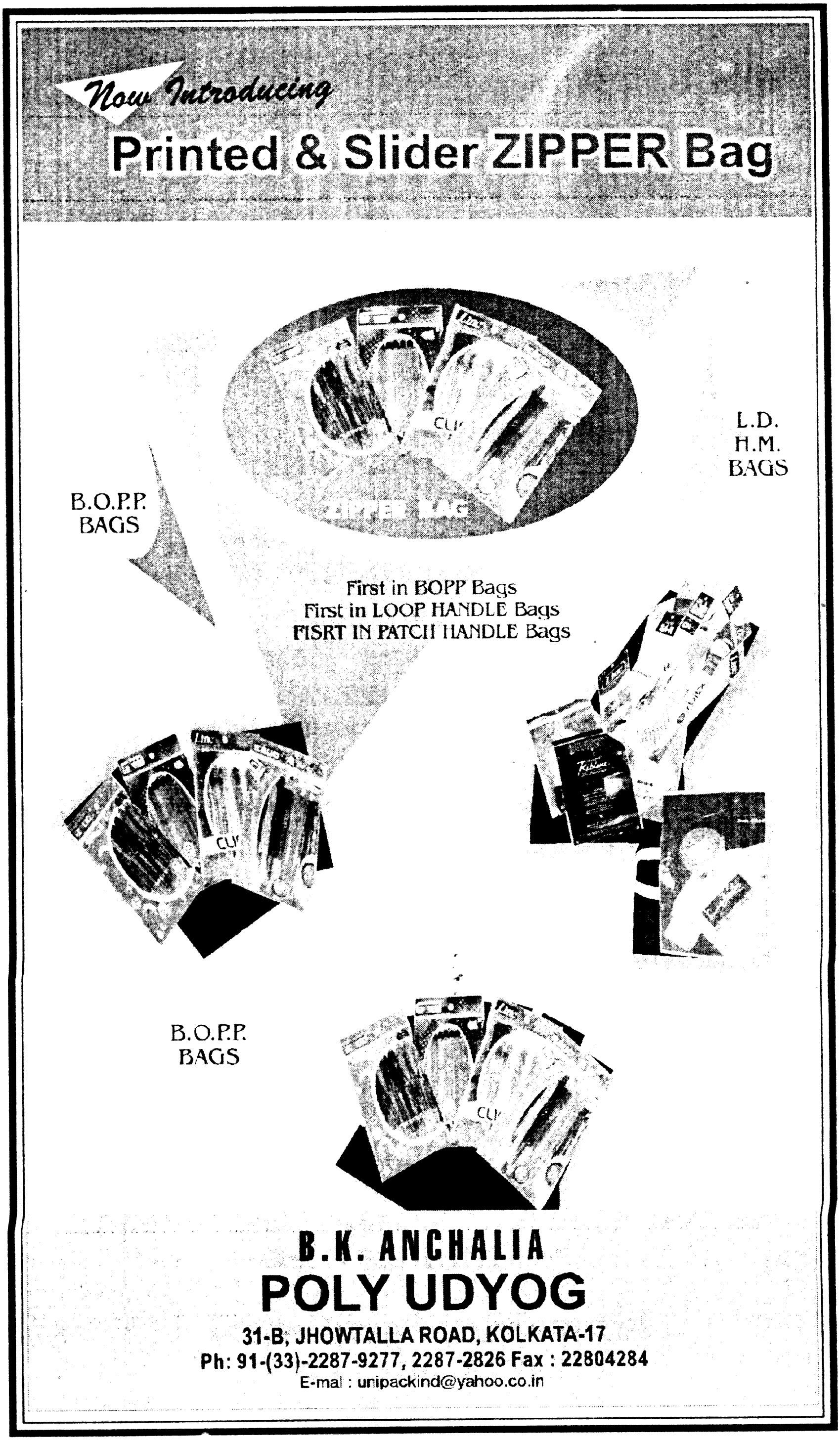
Now Introducing
Printed & Slider ZIPPER Bag
ZIPPER BAG
L.D.
H.M.
BAGS
B.O.P.P.
BAGS
First in BOPP Bags
First in LOOP HANDLE Bags
FISRT IN PATCH HANDLE Bags
B.O.P.P.
BAGS
B.K. ANCHALIA
POLY UDYOG
31-B, JHOWTALLA ROAD, KOLKATA-17
Ph: 91-(33)-2287-9277, 2287-2826 Fax : 22804284
E-mal : unipackind@yahoo.co.in

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan	Bhaonagari Ghantia
Kolkata Nasta	Jocker
Badsha Khan	Lajawab
Picnic	Papri Ghantia
Raja	Rim Jhim
Shubham	Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3293-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

शुभचिंतक

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶ Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶ Hygiene ▶▶ Baby Care ▶▶ Stationery ▶▶ other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9.00 pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

22, Camac Street, Pantaloons Building
Block-A, 3rd Floor, Kolkata - 700 017, Tel : 40091234/40091200
Fax : 40091303, e-mail : info@subhash.com., website : www.spml.co.in

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-eiectric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

B JAIN
JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

TITTHAYARA
Vol XXXI. No. 6
25th September 07

Registered
No. SSRM/KOL./RMS/WB/ RNP - 070/2007-09
R.N.I. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225